

सुजानसरोज

प्रथमखण्ड

जिसमें

उन्नीसवीं शताब्दी के वर्तमान कविवृन्दों की कविता और जीवन चरित्र वर्णनहै जिस्को श्री पण्डितवर बलरामपाँडे सुजान कवि निवासी बालिया नगराधीन हल्दीने कविता रसिकों के चित्तविनोदार्थ संग्रहकिया ॥

और

श्रीबाबूबुद्धनारायनजी निवासी हल्दीने अतिपरिश्रम पूर्वक ज्योंका त्यों उल्थाकर विदितकिया ॥

पहलीवार

191

लखनऊ

मुन्शी नवलकिशोर (सी, आई, ई) के छापेखाने में छपा
फ़रवरी सन् १८९६ ई० ॥

श्रीनिकुंजविहारिणेनमः ॥

प्रस्तावना ॥

दोहा।

रहिमन वे तरुनारहे जिनकी छाँह गँभीर ॥
अब बागन में रहिगये सेहुंड़ कंज करीर १

प्रथम में उस सर्व्व शक्तिमान् करुणानिधान दृगा घन गगन जगदीश्वरको सानुनय कोटान कोटि धन्यवाद देताहूँ कि जिसकी कृपा कटाक्षसे आज मुझे यह अलभ्य अवसर प्राप्त हुआ है कि अपने इस क्षुद्र लेखनी द्वारा आप सब महानुभावों का गुण उल्लेख कर निम्न लिखित वाक्यों से आप सबों का अमूल्य समय व्यर्थ व्यतीत कराने को प्रस्तुत हूँ ॥ प्रियवरो ! मैं इसी भारत का एक तुच्छातितुच्छ व्यक्ति हूँ यद्यपि परमेश्वर ने विभव व्यवसाय तथा विद्या ऐसा कुछ दिया नहीं कि जिससे आप सब चीर परिचितहों। दूसरे वीर केशरी वीरेन्द्र विक्रम तथा भोजका समय भी नहीं है कि जिसके सभा में अनेक प्रान्तों के कवि कोविद एकत्रित हो एक दूसरे सह अपना परिचय सम्बन्ध प्राप्त करें यह बात आपसब भलीभांति जानते हैं कि हमारी मातृ भाषा जिसभांति अवनति दशाको प्राप्त हुई है और होरही है इसके सूक्ष्म कारण को बिचारने से भारतेन्दु जी के अकाल काल ग्रस्त होना भी एक कारण प्रतीत होताहै क्योंकि उनके समय तक ऐसी दशा नहीं थी कि अभ्यास के अर्थ प्रेकटिज कहने से

हमारे भाइयों को बोधहो ॥ तो भला ऐसे समय में सिवाय पयटरों के कवियोंको कौन पूछ सक्ता है। हम इस बातपर बहुत उद्यत.हुये कि इससमय जितने वर्तमान कवि हैं उनकी नामावली मय जीवनचरित्र के संग्रह करूं वरन इस बात का हमने कई एक पत्रों पर विज्ञापन भी दिया पर अब कविहई कहां है इस समय जहां तक देखी जातीहै लुके छिपे लौंडोंकी कविता कवियों की गणना सूचित कराने में प्रस्तुत है पर यदि उनका जीवन चरित्र देखा जाय तो कोई आज सूतिका गृह से निकलेहैं और कोई काल्ह माके पेटसे जनेहैं तो भला ऐसे लोग अपना क्या जीवनचरित्र भेजें सहायता दें ? जो बचे खुचे सत् कविथे उन्होंने तो भेजही दिया मुझे यह पुस्तक बनाने में यह अभिप्राय नहीं है कि हमारी नामवरी प्रख्यात हो वरन मैं यह चाहता था कि भविष्य काल में यह ग्रंथ इतिहास रूपहो आप सबों का नाम चिरस्थायी रहे आशा है कि हमारे इस लेखपर कविजन विशेष ध्यानदे अपनी २ नामावली भेजेंगे कि जिसको दूसरे खंडमें प्रकाशित कर आपसबों का अद्वितिय यश पात्र बनूँ अन्त में मैं उन सम्पादकों को भी धन्यवाद देताहूँ कि जो लोग इसके सहायता दिये हैं और देकर उत्साहित करेंगे किम्बहुना ॥

आप सब कवियों का कृपापात्र

पं० बख्शरामपांडे (सुजानकवि) हल्दी

बलिया

सुजानसरोज॥

अजान

विमोहितसन्तपढ़ैद्विजमन्त सदा सुखतन्त है शोभ अपार। सिकोराम पुरैनविलास सरोज विकास सुगन्ध अपार॥ मधुव्रत ऐसो सरोवर वासते जो न गयो मनते सुविकार। अजान यही मन कीन्ह बिचार कि भाल लिखी लिपि को सक टार १॥ दो०॥ सम्बत शशियुग अंकमहि फागुनमास हुलास। विरोल्लास प्रकाश किय कविअजान सविलास २॥

अम्बादत्त

काहू ठौर माखन की चोरी होत चारोंओर कहूँरास लीलाही की रीति सरसाईहै। चीर को हरन कहुँ यमुना के तीर होत गूजरिनहूँ ते कहूँ रोक टोक छाई है॥ अम्बादत्तहूँ ने आनि कही अहे सही बात गोपी अरु ग्वाल चाल चले मनभाई है। जाइ अब बसिये अनत काहू गावँ माहँ गोकुल के गावँ में अनीति अधिकाई है १ फेंकहु पचीसी दूर कहा सोरही में अहे नाम जनि लेहु कर नाटक तमाशा के। लखे शतरंजहूमें रंज होत शोच करे छुओ जनि चौपर को वश होय पासा के॥

अम्बादत्त आचरज जोपै कछु देखो चहो चातुरी चला-की अरु बुद्धिके विलासा के। खेलये अनूठो अति रूठो को रिझैवेवारे लखो करो महाताश कौतुक पचासाके २॥

ईश्वर

पाय पंच भूततन विषय अनेक संग लीन ह्वै नशोच कियो आपने सुगति को। मोहित कुरंगसम वागुर विषम फँस्यो ससके न जात जाते ईश्वरजू रतिको॥ संतन सिखायो सिख श्रौण ना सम्हारो ताहि विदित जहान भयो ऐसो दुरमतिको। आयोआधो बैस नगिचायो मृत्यु बासर सुगायो ना गवाँर तैंने नाम यदुपतिको १ बालक समैंमो बैस बादिही अबोध गयो खेलत खरात खेल कलुष कुगति को। आयो तरुणाई संग तरुणिन प्रेम पाग्यो सन्तत सराहत स्वभाव दुरमतिको॥ होत पछि-ताये अब ईश्वर जू बादि कहा जरा ज्वर घेरो भयोहीन जू शकति को। चारोपन बादिही गँवायो कहा पायो हाय गायो ना गवाँर तैंने नाम यदुपतिको २॥

कालिका

लाड़िली पिया के संग झूलत हिंडोला मांझ इन्दु मुखी सरस सोपानि दियो गरमें। आस पास नारिगन सुन्दर सुवाद्य लीन्हे लावनी सुभग राग गावें पंच स्वर में॥ आनि आनि बुन्दें मुख परे झरे खरे २ कालिका सुधाकर ते सुधाजनु सर में। शरमें दुलारी प्यारी बारी सुकुमारी कहे हाहा प्राणप्यारे मम गहो कर नरमें १ मचीफागु धुधुर असाढ़ कैसो धराधर बृज बीथिकान में

तमाम रंग ह्वैगयो। नाचति मयूरन सी घन सो निहारि श्याम चपलासी राधिका नवेली आनि ह्वैगयो॥ कोकिला सी गान इन्द्रबधूसी जनाती बाम कालिका कहत घन घहरे मृदंग यों। कुंकुम अबीर बुंद बरसे अपार धार बीचहि बसन्त जनु पावस उदय भयो २॥ दो०॥ भई व्यथा मनमें अधिक सुनी न पियकी बैन। अब करिहैं को प्यार सखि दई व्यथा जो मैन ३॥

कृष्ण

कीन्ही जे शिकायतें हिकायतें बनाय झूँठी राज्य के बिरोधी क्रोधी मानो बन्धु कालके। जानि वे प्रमान को न ध्यान कीन्हों काहू कृष्ण सुहृद अतृष्ण लाट आयो कियो ख्यालके॥ परम सुजान जानि भूप औ दिवान जूसो चलत समैमो कह्यो वचन सम्हालके। वाह २ सुनिके प्रसन्न भये खैरख्वाह भांगेसुसियाह बादशाह जे भुआल के १ आरामो प्रेम पसार बढ़ाइ बनाइ के व्यंजन फूल फली सो। आइ करी पुनि आपने गेह सुबाजे मँगायके प्राग थली सो॥ ऐसो प्रसन्न किये सब साहब दीन्ही मिलाय कुमार बली सो। श्री डुमराँव महीपतिने करी लाट की जाफ़त भाँति भली सो २॥

कार्तिक

आजुरी बधाई चलो ल्याइये छबीलो लाल ऊषा अनिरुद्ध को सुमंगल रचाइये। चलै वेगि द्वारावती ल्यावहि कुमार मार रतिको दुलारो निज सखि प्यारो पाइये॥ बिरह बिकल मुख कमल झुरानो जात दरशन

वारि सींचि ताहि हरवाइये। देहि अभिमत फल शंकर सहाय होहि बरलेन जाहि याते गौरिजा मनाइये १॥

कान्ह

योग जपादिक को करिबो अरु भाँवरि तीरथ के भरिबे को। सन्तत सन्त समागम को अरु ब्रह्मविचार विचार करे को॥ कान्ह भने गुने औ मन शास्त्रन मास समेतहु दान किये को। सो गुरु अंघ्रि सरोरुह सेवत है फल ये जग देहधरे को १ शीतल सुगंध मन्द मारुत स्वनित रूरे पूरे धूरि धूसरित रोदसी विहारेरी। कुंजन पलाशं फूले डारन अगार पुंज गुंज मधुपाली मन मुदित प्रसारेरी॥ कान्ह कूकि कोलियान फूँकि २ बरबस बिरहा अनल हिय प्रबल प्रजारेरी। हारे करि यतन अतन सो सहायक लै कन्त बिन सजनी बसन्त तन जारेरी २॥

कमलाकन्त

होरी अहीर को साँवरो छैल छबी यहि मारग ह्वै निकसोरी। सोरी गयो यहि मारग ह्वै करि झाँझ पखावज की घनघोरी॥ घोरी अबीर गुलाल गुलाब में बाँह गहे औ किये बरजोरी। जोरी निहारत वारत प्राण सुढारतरंग पुकारत होरी १॥ दो०॥ जिल्लनपद्धति गोरक्षपुर जानब सकलजहान। बसत रापतीतट निकट कुँवर व्रती सुखखान २ शरद शुक्ल तिथि पञ्चमी सुकृतुशरद बुधबार। अष्टादश शत छानबे भयो ग्रन्थ सुखसार ३॥

खड्गमल्ल-लालकबि

सीता संग सुन्दरी सुएक ओर हर्षित ह्वै हिलिमिलि मंगलादि गीत उचरति हैं । एक ओर मांग मुकुतान ते सँवारे कोऊ काहू पद नाइन महावर भरति हैं ॥ एक ओर लाल बहु बसन रसीले धारि नारि पुरबासी युथ युथ निसरतिहैं । कौशल्यादि केकयी सुमित्रा मिलि एकओर मणिगण राम पै निछावरि करति हैं १ माचो देवलोकमें अनन्त खलबल लाल ब्रह्मा वेद भूले छुटे तारीहू महेशकी । डोले लागी पुहुमी समुद्र थहरान लागे झिलमिल होन लागी कीरन दिनेश की ॥ दरकनलागी पीठ कोल अरु कूरम की करकन लागी त्यों सरस फनशेश की । सहित समाज आजअवधपुरी में जब निकरी सवारी महाराज अवधेशकी २ ॥

गजेन्द्र शाहि

सुखद हुलासिनी प्रकाशिनि अखिल लोक दासदुख दूरिकरि बिरदहि धारि है । प्रबल प्रचण्ड भुज दण्ड बश शस्त्रधारि मारि दुराचारी दुष्ट क्षणमें संहारिहै ॥ श्री गजेन्द शाहि अम्बे निजजन हेतु जानि केएबार दैत्य दल दंगल बिडारि है । सर्वरूप धारि हरिहरहू सहाय कारी मातु दुर्गा मेरी सदा शरण तिहारीहै १ एरेमरे मन धारु सिख मेरे हियबीच त्यागि माया फन्दे भजु दशरथ नन्देरे । श्रीगजेन्दशाहि जेतेनभ मेंन तारे तेते तारे अघवारे तेभयेहैं निरद्वन्देरे ॥ श्रीमन्महाराज कोशलेश राघवेन्द्र ऐसो जपि नाम जन काटेयमफन्देरे ।

छांड़ि छलछन्दे सब आनँद के कन्दे मन एक बार सीता रामचन्दे क्यौंन बन्देरे २ सुन्दर सुहावन सरूप मन भावन दनुज को सतावन हरन दुख द्वंद के। जग आदि कारन सँहारन असुर मद तारन सुजन कोटि दायक अनन्दके ॥ श्री गजेन्दशाहि सुख दायक सुरनि सदा लायक सबनि के सहायक सुरेन्दके। छांड़ि छलछन्द सब आनँद को कन्द भजु दारिद हरन है शरन राम चन्दके ३ पाल्यो देश देशको भुआवल नरेश भले यश को प्रसाख्यो जग नभ पूर्ण चन्दसे। अन्त रटि राम दशरत्थ सम गंग तट चढ़िके बिमान सुरधाम गौ अनन्दसे॥ भरतसे दलशाहि शोभनाथ शत्रुहन लखन अहलसिंह उदित अमन्दसे। बलिया बखानी औधि राजेराजधानी भये ईश्वरबकश देवराजारामचन्दसे ४ राधिका संग सखीन को लै बहुफागरची ब्रजमें करि घूमहि। दै चिटकी करतालहि नाचहि गावतीग्रीव क-पोत से दूमहि ॥ शाहिगजेन्द्र तहाँ नँदलाल को बाल नचावति तालदै झूमहि। गाल गुलाल लगायभले मुख गोप वधू ब्रजलाल के चूमहि ५॥

गुलाबसिंह

रैनिबड़ी लघुद्योसन में मुहिं मारक मार मरोरिधरेगो। तीरसो पीरक शीरक बीर न धीर समीर समीर अरेगो॥ भानुशशोभ्रम आतपजान्ह गुलाबनिरन्तर जीव जरेगो। हन्तहिमन्त अनन्त में कन्त किं अन्तक मो दुख अन्त करेगो १॥

गोविन्द

दो० ध्यान धरत दुखदहतहैं नामलेत सुखदेत। नमतसिद्धि निधिदेत हैं गनपति बुद्धिनिकेत॥ भूपति किशुनकिशोरविधु कीअनुशासनपाय। रचोकोक भाषा विशद कामकेलि सुखदाय॥ सम्बत नभवसुवसुधरनि चैत्रमाससितपक्ष। चन्द्रबार गुनि चन्द्रतिथि भयो ग्रंथ परतक्ष॥ जीतो भुवमंडल अखंड खग्ग वृन्दनिसो शत्रुन की काटि रुंड मुंड झुंड मोये हैं। बार २ बैरी बनितान के बिलोचनके आंशुन के धारा पारावार पै समोये हैं॥ कहै श्रीगोविन्द भूप किशुनकिशोरचन्द जूके तेज पुंज मारतंड ज्योति जोयेहैं। चारोओर बीर रनधीर न अमीरन के कम्पे भयमाने उरमानो शीत भोये हैं ४॥

गोपीनाथ

कृष्णरिझावन एकं समैं सजिसाजचली वृषभान दुलारी। श्यामलरंग रँग्यो सब अंग गह्यो कटिपीत सुवस्त्र सुधारी॥ पंखमयूर के ताजकियो अरुबंशी को टेर सुटेरतप्यारी। राधिका कृष्णको रूपधरयो तबश्याम मई छबि श्यामनिहारी १ कैंपितुमातु सुतादिकत्यागिकै गैलगहो बन मंगलकाजे। कै निज नारि उरोज लगे पुनि भोग करे सुख सम्पतिसाजे॥ सार यहेजग माह दुहूं सबबेद पुराण कहे छबि छाजे। कै शिवभक्ति बिरक्तनकी अरु कै जनि के पग पैंजनिबाजे २॥

गौरीशंकर

पण्डित प्रबीननको मानद दयाको धाम परउपकारी देव तरु सो उखरिगो। चातुरी की लीनो कला नाना जाति भांतिनके कुसुमसमूहनके बनही उजरिगो॥ कौन करे शिक्षा अब तनमन धनलाय शिष्यन के आदरके बादर उघरिगो। श्रीप्रतापमिश्र सुरलोकहि सिधार्‍यो हाय नागरी गुनागरी को भूखन उतरिगो १॥

गोपालानन्द

दो॰ भारत राखन जो चहो चाहो निज प्रतिपाल। तो तन मन धन दै अहो रक्षो गाय गोपाल॥ आवत है लज्जा नहीं तुम्हें देखिये हाल। बधिक बधे नित गाय कह तेरे सौंह गोपाल॥ क्या करनी निज आर्य्य की गयो भूलि यहि काल। जिन गैयन हित आपनी दीन्ही प्राण गोपाल॥

चन्दकला

द्विज कपि हित कर शील धर अरिहारक रणधीर। पालक दीन अनन्त के गौर श्याम रघुबीर॥ बुन्दी पति रघुबीर ललामा। शीलादिक उत्तम गुण धामा॥ विक्टोरिया खिताब पठायो। के, सी, आई, ई छबिपायो॥ जब लगि महि अहि शीश पै तब लगि जग सुख दाय। होतरहे उत्सवइसो चन्दकला मन भाय॥ रास रच्यो नँद नन्दनने तिन गोपिन को लखिके रतिलाजे। हाथगहे हरिको करमें कोउ कन्ध धरे हरिकें छबि छाजे॥

चन्द्कला नवला कोउ नाचहि लाय कटी रसना रस बाजे। कैंजनि के बिछिया पग बाजत कैंजनि के पग पैंजनि बाजे॥

छबीले

आवत घिरोसो तम दिनह फिरोसो नित सीत परसोसो पवमान सरसन्त में। ओस बरखोसो तामें रस भुरसोसो कोक बिरह उसासो कोक् नद बिलसन्तमें॥ भाग उभरो सो वाके अंक लै धरोसो जिन तीयपी छबीलो ऐसो समय इकन्तमें। उरमें अरोसो मेरे बिरह खरोसो मोहिं परत भरोसो अन्त करिहे हिमन्त में १॥

जगतनारायण

ईशामसी आयो इक धर्म धुज धारिबे को बरन बिगारिबे को कमर कसी रही। नींचन को साहिबी मुसाहिबी गलीजन की राम नाम मेट के सलाम सी धसी रही॥ वेद्न को खंएड मएड आपनो पाखएड धरे और की न माने आनि आपनी बसी रही। पूरब निकास आसी रसना समेट लीन्ही ईशा तोन दीशा मिसी दातन फसी रही १ सबते विनय करूं कर जोरी। मानहु सत्य विनय यह मोरी २॥

जगन्नाथ

जादिनते बिछुरे मन मोहन तादिन ते पतियो नाहिं पाई। मैं अकुलाय रही सखि हे अरु कृष्ण भये कुबरी बस जाई॥ आपु वहाँपर राज करे कुबरी जड़को निज

रानि बनाई। ए इतनी सुनते बतिया हिय फाटि गया पै दरार न आई १ बहुत दिनन लों मैं कीन्हों संग पण्डित के तापै यह बात कोऊ मुझको सुनायोना। पढ़ो मैं किताबन को भाँति २ काल बहु ऐसो ए कवित्त निज नैनन लखायोना ॥ कहे जगन्नाथ शुक्ल सुनियोजू सीताराम सुनिके समस्या अस मोरे मन आयोना। मैंही तोसों पूछौं यही लागि कहो पण्डित जू रति रस रंग अंग कौनि डोलि पायोना २ ॥

तिलक

मुकुट के प्रभापै प्रभाकर सहस्र वारों और वारों कंज दलश्यामपलकन पै। भनत तिलक मुख मण्डल पै वारों चन्द्र कोटि काम वारों श्याम बपु झलकनपै ॥ बंशी त्यों बिशाल लाल अधरं अमोलन पै मोतिन की लरी वारों श्रम जलकन पै। और कहा वारों कछु मोसों ना कहत बने बाँकुरे बिहारी के अमोल अलकन पै १ भादव की निशि कारीघटा घनशब्द कठोर सुनाय रहे। लागे निमेष नहीं अँखियां तिहिपै शर मैन चलाय रहे ॥ पापी जिया न मनाये मने बिरहानल ज्वालजगायरहे। काह गुनाह कियो बिधना पिय जाय बिदेश जो छाय रहे २ ॥

दूधनाथ

भवकी भरनि भव भव को करनि खल फनि की भरनि सिरी भवकीघरनिहो। भव की जननि ममदुखकी दलनि दीन दुखकी दलनि मोहि दुखकी हरनिहो ॥

हतत कदन मम बदन सुनहु मातु हतन करहु ममदुख की दलनिहो। दूधनाथ दीन जानि हतत कसाई मोहिं अब न बिलम्बकरु सुखकी सदनिहो १॥ देवीसब बरदायनी सुखद जौहरी नाम। तिहिढिग भलसडनगर में विरच्यो चरितललाम॥ सम्बत बिक्रम भूपके जलधि वेदग्रहभान। भाद्रमासके अन्तमें पूरण भयउसुजान२॥

धर्मराज

सांझ समय बनिता बृजकी नकबेसर नूपुर भूषण साजे। अंग शृँगार किये मगमें झुमि चाल बिलोकिके कुंजर लाजे॥ गान किये कलकण्ठ लजावति तालजुटे रव किंकिणि बाजे। धर्मराज दृग देखि मोहे मदखंजन मीन मृगन भाजे १ प्रिया मुख चूमत हरि ना अघात। पावसमें चढ़ि अभय अटा दोउ हिलिमिलि पछराखात॥ जोबन के मद छके छैल छुटि करत विविध छल घात। धर्मराज निरखि छबि दोऊ बार २ बलिजात २॥

नवीन

रँग रावटी चित्र विचित्र रची हरियारी कियारी सुहावनमें। शुचि हीयनवीन प्रवीन प्रिया रति रंग उमंग बढ़ावन में॥ निरशंक ह्वै फूलन की परयंकपै अंक भरे चित चावन में। मधुरो अधरारस चाखि लखे धुरवान के धावन सावन में १ मेचकता तन त्रानकसे चढ़ि पौन तुरंग दशोदिशि धावे। चापनवीन पुरन्दर को गहि बाणसे बुन्दन को बरसावे॥ तेह भरे गरजे तरजे असि

विज्जुछटा करले दिखरावे। जानि हमें अबलासबभांतिन बीर बली धुरवा धमकावे २॥

प्रताप

छप्पय–तजि दुखप्रद दुरव्यसन पुरुष बनिता अरु बालक। मनक्रम बचसे होहिं सुखद आज्ञा प्रतिपालक॥ निज गौरव पहिचान सजग रवि कम्पहि जनसो। करहिं सबै सब काल देश हित तनमन धनसो॥ भारत में चहुं दिशि प्रेममग्न धर्म ध्वजा फहरतरहे। बाणीप्रताप हरि मिश्रकी सुहृद हृदय आदरलहे १ मन्द महा मधुरी मुसुंकानि में नेकहिले जिय देति हिलाई। त्योंपरताप जू दन्त लगे सिसकीन की सौगुन शोभ सुहाई॥ स्वादसोंसाने रसीले अंगुर सो कुन्दरी लों लिये लोनी ललाई। वे अधरा अधरान धरे रहे देहं धरे को यहे फल भाई २॥

प्यारे

प्रहलादसे रारिकियो हिरनाकुश रामने मारिके प्राण नशाई। कौरव पांडव युद्धकियो सों प्रसिद्ध अहे किमि होत अनारी॥ सा त्यहिकालतेराजलुटो सब ह्वैके खराब सुराज बिसारी। हे प्रिय मित्र बिचारकरो झगरा रगरा किय लोक उजारी १ दूरिके बात तो दूरि करो अब देखहु तू निज नैन पसारी। बम्बई औ बलियागढ़ आजम होय गयो जुउपद्रवभारी॥ हिन्दुन केते मिले धरि धूरि तुरुकनहूकत प्राणबिसारी। हे प्रिय मित्र बिचार करो झगरा रगरा किय लोक उजारी २॥

पूरण

या मनने कभू न कीन्ह विचार॥ सारासार विचारन कीन्हा फँसगयो मायाजार। बुरासमय जबइसपरआया तब शिर दैदैमार॥ निबलदेखि बहु द्वन्दमचावे लाखों देवेगार। सबल देख चुप का होजावे ऐसानीचगवाँर॥ अपने सुखके हेतु द्योसनिशि ऊदम करत हजार। कहै पूरण तू मनुआंमेरो चीन्हों आतमसार १ बलवन्त नगर अस्थानहै जन्मभूमि सोजान। भांसी जासोंकहत हैं आतम ज्ञान बखान २॥

पन्नालाल

पूत बिरंचि से मीत तमारि तुषार तऊ जलजातहि जारी। दूरिकलंकभयो न मयंक बसे त्रिपुरारि के शीश मँझारी॥ सीयत्रिलोक धनी वर पायके दुःखलही जग जानतभारी। व्याधके हाथ गुपाल मुये कहुभाललिखी लिपिकोसकटारी १॥

बीर

एरी चल बीर तोको श्यामसोंमिलाऊं आली आज बनमाली भेंट होयगी सहलमें। वेगि चलुधाइ तोते सांचहै सुनाई होंतो आपलखिआई कोऊ गोपना टहलमें॥ मतहहराय मेरी कही मनलाय वृथा प्राणनगवांय गुरुजनकी दहल में। हीतल को ताप क्योंन शीतल करे तू बीर मिलि बलबीरसों उसीरके महलमें १ पावस में जातहो सुजान ह्वै विदेश कान्ह जानतहो नाहिं कहा ह्वै है गति याकी है। जादिनते सुनी है तिहारे चलिवे

की बैन मीन सी तरफराति देखोना छिनाकी है ॥ ऐसही बिछोह जो बिचारो हतो बलबीर प्यारी तनवारी क्यों लगाई यालताकी है। हृदय कियारी माँझ सींची प्रेम जीवन सो खल मति जानो यह बेलि बिरहाकी है २ घर बार बिसारि दियो सिगरो गुरुलोगनि की नहिं भीति करी। सखियान की सीख सिखी न कछू कछु न्यारही लोकते रीति करी ॥ समुझावतही बहु बीर हमें सबभूलि केहां परतीति करी। हमहीं वह लाल अनीति करी तुमते बिन जाने जो प्रीति करी ३ होली के खेलैया बलबीर जूके भैया सुनो सुता वृषभान की है कसक निकारेगी। मूठलै गुलाल लाल कान लगि ऐंचि तकि तिरछी चितौनि कछु मूठ सम मारेगी ॥ सखिन समाजलिये आज चलि आवति हैं ग्वालंन की भीर भार नेकु ना बिचारेगी। श्यामरंग पीत पट हेरेहूं दिखेहैं नाहिं देखतही लाल तुम्हें लाल करिडारेगी ४ ॥

बुधन

रास रच्यो यमुना तट मोहन लैसँग मैं सब गोपकुमारी। धारि अनंग से अंग प्रभा करि चित्त उमंग बजावत तारी ॥ कोऊ गुपाल गहे कर पंकज ठाढ़ी बके बनिके मतवारी। कोऊ लखे मुख साँवरो बुद्धन कोउ नचे सँग कुंजबिहारी १ हौं हल्दी बासी सुवन बुद्धन राय सुनाम। पितु मम राम इयादि जिन गयो सुभग सुरधाम ॥ बालहिते पढ़ि नागरी कियो मिडिल गुण पास। पैबिन पाये नौकरी निशिदिन रहत उदास २॥

बिंधेश्वरी

बन्दों शिव पदरेनु सुखदाता त्राता सुजन। महा कठिन जग जेनु जे निज बल बश मार किय ॥ सहगोरा मम ग्राम अन्तर्गत गोरक्षपुर। बिन्धेश्वरी सुनाम अवनी सुर द्विज पंक्ति कुल ॥

बामन

भूषण बसन औ असन बहु भाँतिन को भक्तन के भौन पै बिराजे भराभरमें। हीरालाल माणिक अकूत मुकुताहल हूँ कल चाप रहे महा आनंद अमर में ॥ बामन भनत भगवानभूतनाथ तेरे नखन दिवाकर के महिमा समरमें। बितल रसातल लों आठोयाम दीनन पै बरषे मघाली दान धारा धराधरमें १ कैसहू अभागी अज्ञ होवे जो जहान बीच साँचो जिय नेम सो बिचारे यह इसी की। प्रात शिव पूजन कै ध्रुव सों सुधारे ध्यान भव्य भगवान भूतनाथ अवनीसी की ॥ बामन भनत ताको पूजे मनकाम सबै कहत पुकारि होवे सत्य बिस बीसीकी। प्रणते प्रतक्ष पन्नगेश बेश भूषण को पाठ जो सुनावे पंचआनन पचीसी की २ वह मारको छार किये जु रहे करिभस्म सुतासु अडम्बरसो। फिरि योग के राज कहाय महा धरिउग्र त्रिशूल बघम्बरसो ॥ कवि बामन सो गिरिराज यहाँ कोहवार में धारि पितम्बर सो। पुजवावति आपन देव सोई तिय ढाँपि दिगम्बर अम्बरसो ३ ॥

वचन

वरदाता माता पिता ज्ञाता दीन निवाज। बच्चन वा जगदीश पद ध्यान कह लाज १ श्याम बरण पै तम हरण रस बस चंचल चोर। नन्द यशोदा पूतरो नैन पूतरो मोर २ प्रश्नोत्तरी उदार रसतरंग रसरंग हित। अल्प बुद्धि अनुसार बरणत बच्चन लाल द्विज ३॥

भानु

रोला के पद चार मत्त चौबीसधारिये। उल्लाला पद दोय अन्तमाहीं सुधारिये॥ कहुँ अट्ठाइस होयँ मत्त छब्बिस कहुँ देखो। छप्पयके सबभेद मीत इकहत्तर लेखो॥ लघुगुरुके क्रमते भये बानी कबि मंगलकरन। प्रगट कबित की रीति भल भानु भये पिंगल सरन १॥

मार्कण्डे

नवलमेघसावननवल नवकुंजनआनन्द। नवमयूर सावननवल नवराधेनँदनन्द १ हिंडोरे झूलत युगल किशोर। श्रीनँदनन्द प्रिया अलबेली श्रीराधेचितचोर॥ सूर्य्य कोटिप्रति प्रभाविराजत दामिनि लक्षकरोर। हुलसि मारकंडे गुणगावत लखि २ प्रभुकी ओर २॥

रघुबीर

पूरोचन्द्रहासकर बाननविलोकियतवर्मेतरचर्मऐसो सकलकलाकोहै। पाटिनकेबीच तरवारनकरतवज्र चक्रनभुशुंडीतोप परम प्रभाकोहै॥ भालहूमें परशानराचहूननीकी जाको बरछनहींमें करदंडनहिताकोहै। रघुबीर

खंडन त्रिशूलको कुठारीऐसो विरदसदाई ममसातुराधि-
का कोहै १ तबतो न कियो कछु काबिअरी बहुभांतिभटू
समुझावन ते। अब बूझिपरी रघुबीरभले जबसौतिन
तावति तावन ते॥ यह मानमेरो सिख गांठ करो अब
आपुहि आवन भावनते। जबलों पद पै न गिरे तबलोंम-
तिमानिनी मानुमनावन ते २ जा दिनते यमुनातट में
सखिजाय अचानकहीं लखिलीन्हो। वादिनते रघुबीरभ-
ले कुलकानिकीबानिनिछावरिदीन्हो॥ केतिक धीरधरो
फिरिकेन धस्यो बरु याब्रजमें सबचीन्हो। पीरननेकुघटो
घटिको परबावरीबावरोसाँवरोकीन्हो ३ नीकोकछूनलगे
सजनीजबते वहसाँवरी मूरतिटीको। टीकोसबै हियकीब-
तियांगुडियानके खेलिबो त्योंपस्योफीको॥ फीकोपरे क्यों
चवाइन को दिन द्वैक ते गाढ़ परे यह जीको। जीकोकहूँ
रघुबीर किते पिय अंक लगे तो कलंकहु नीको ४ कहु
काते हन्यो रघुबीर निशाचर भौंरहि भावत काह हिये।
भुविमें सबते अतिउच्च कोहै मघवा रमणी कह का कहि-
ये॥ हरशार कियो क्यहि को रिसकै दशरत्थजू रामको
काह दिये। गृह काते फबै रघुबीर कहे यहि उत्तर मध्य
को मेरे हिये ५॥

रमाकन्त

अखिल अमोघ अघ ओघ ताप नाशहोत सकुच
सरोज सम होत गोत दन्दके। तारन से तामस दुराने
जात दूरहोत भक्तन कुमुद उर अंकुर अनन्द के॥ चा-
हक चकोर चित चौगुना हुलास होत रमाकन्त रहत न

लेश छल छन्द के। महिमा महान होत उज्ज्वल प्रमान होत ध्यान होत हृदय सुजान ब्रजचन्द के १॥

रामपालसिंह

जानती जो मैं तुम्हें पहलेसे न प्रीति लगावती राम दुहाई। याबेविचार भई मुहिसों सुनो जैसी करी नृप तैसही पाई॥ का मृगनैनीपै चित्त गयो का मयंकमुखी पैतबीयत आई। कापर मोहि गये तुम यों कहो काके बियोग विभूति रमाई १॥

रामनाथ

प्रश्न कस्यो तिय कंज खिले कब को सब कारक हारक होई। को निशि देखि सदा दुखपात बतावहु जो बरजी सब कोई॥ कीन कहा जननी बन जावत लक्खन राम सियाहि बिजोई। उत्तर दीन सुजान पिया हँसि प्रातसमय चकई अति रोई १. दीरघ दानन की चहुँ ओरन राम कथा सुनियो सुख सोई। ना रहिहैं अब कञ्चन शैल दिवाकर अन्तर कारक जोई॥ नाशि निशा कछु द्योसन मांझ निरंतरही पति संगम होई। ता प्रभुको हरिधाम सिधारत प्रात समय चकई अतिरोई २॥

ललिते

कूकति कोइलि माती महा हियरे बिरही जनके तपवे परे। त्यों ललिते बन बागन ते सुखमान के आनँद से चपके परे॥ शीतल मन्द सुगंधित पौन ते भूमि प्रसनभले टपके परे। भारसो भौंरन बौरन क्रो द्रुम अ-

म्बन के झपके लपके परे १ भरे झौंर भारन हजारन सुडारन पै झपकि लपकि वर द्रुम द्युति छोरे देत। ललिते लतान के वितान से तने हैं तैसे चहूंओर कोकिला कलित कोर शोरेदेत ॥ बिकसे चहूंघाबर विटप बसन्त बाग निकसे कलीन अति सुखमा हिलोरे देत। बोरेदेत आनँद हियेमो प्रेम घोरेदेत पवन प्रसून भूरि भूमिपे त्रिथोरे देत २॥

लक्ष्मण

खंजनसी सुठि नैन नचावति भौंह कमानते बान चलावे। बैठी है सौंहें झरोखें अटापर मृद्दुलता प्रिय गान सुनावे॥ भूषण आदि शृंगार किये वो सुगंध सने सदसेज बिछावे। लक्ष्मण ताहु.पै बांह डुलावति का तुमरे लिये डौंड़ी पिटावे १ लखियो जो अशुद्ध कवित्त बतीसी मह शुद्ध करो कबि कोविद राई। क्षमिये अपराध भई गलती अवरु रूठि शब्द जो ग्रंथन पाई॥ महिभे भोजबंश सुवंश सुनों जिनने परमारथ प्रानगँवाई। नर जानहु यासों बखान करे पद आखर आदि जो नाम सुहाई २॥

लाल

रहिगई हौंसिला सदाई मेरे हिय माहँ काहू दिन प्यारी पग मेरो धाम धारितो। करितो निहाल लाल बोलि मुसुक्याइ भले प्रेम की कहानी रससानी परिचारितो॥ छुटिजातो कसक करेज की हमेश कर करि अभिसार पास मेरे अभिसारितो। काढ़िके करद पढ़ि क-

लमा किलोलकर बापुरो बिरहको जिबह करिडारितो १॥

लालजी

छके सुन्दन चूमे बिमानन को मदसे भरे झूमत त्यों तन है। जकरे पग जोर जँजीरन सों मड़रात मलिन्दन के गन हैं॥ गज व्यंकटरौन महीपति के अति भावत लालजी के मन है। गरजे चहुँ ओरन से घुमड़े उमड़े मनु सावन के घन है १ महाराज व्यंकटेश तुरंग तिहारो अति मोदभरे. धावत सजीले घन बन में। लाल जी बखानत बिलन्द कौतुकीय बली महिमा महान अभिराम गौनषन में॥ चीते मृग नाहर बराहन पै दावा देत दौरि बृक बाघन कुरंगनके गनमें। टापन टकोरि गिरि शिखर मरोरि मोरि मानो महिफोरि तारिबे को चहे मन में २॥

सम्पति

यामें मंत्र तंत्र पुनि टोटकां अनेक विधि यामें विष जंगम अस्थावर विचारहे। यामेंप्रश्नशकुन औ औषधि प्रकार बहु यामें इन्द्रजाल कृषिकर्म को प्रचार है॥ संपति सुभूत टोना डाइन निवारन है यामें काव्यनीति पुनि बाणिज प्रकार हैं। जाको प्राणअर्थ धर्म काम मोक्षसार जग ताको विषोद्धार मंत्र चंद्रिका अधार है १॥

सीताराम

बौरे रसाल पलाश भे लाल सरोज सुताल रहेछबि छाये। कोकिल मोर मलिंद चकोर रहे चहुँ ओर सु-

शोर मचाये ॥ मन्द समीर चले अति धीरलगे जनु तीर बियोगिनि काये। आयहु बाम सबै दुखधाम लिये शरकाम बसंत न आये १ अब लीजिये देखि दिखाय सबै ज्यहि को मन साध निहारन को। निशि बासरही हिलियो मिलियो गरसो भरि लागि हजारन को॥ मन लीजिये देखि बिचारनही निज प्रेमिन के जिय मारन को। धन यौवन रूप अनूप गँवाइबो नाहक काम गँवारन को २ गगन बाण ग्रह चन्द जेष्ठ दशहरा गुरु दिवस। विकस्यो हेतु अमन्द यह अंकुर शृंगार को ३ अंजनी कुमार को अधार बार बार मोहिं प्रावत्त ना पार को धरामो जासु बलको। नाथ की सहाय करिबे को गो पतालजाय मार्‍यो महिरावन उबार्‍यो है युगलको॥ लाय पुनि लंकहि लड़ाय दीन्हो रावण सो पीछे फोरि मारि डारी सारी बासु दल को। सीताराम सेवक की बिनती है बार बार कबहुँ न भूलो नाथ मोहिं एक पल को ४ गुण श्रुतिग्रह अरु चंद माधव पूरण इन्दुदिन। नाम प्रताप अमंद प्रगट्यो कलिमल नाशहित ५॥

सुजान

शोभित दशन द्युति चंद्रिका समान चारु अमल मयंक मुख सुखमा सुहाय जू। मोतिन की माल त्यों मराल बाल अवलीसी चञ्चल सुजान नैन खंजन लखाय जू॥ ब्रजगोप बालिका सरोज मुख मधुप त्यों क्रीड़त निकुंज गुंज बांसुरी बजाय जू। फूले बाल कास मो बिलास बिलसित ऐसो शरद स्वरूप श्याम हूजिये

सहाय जू १ भूषण बिराजे तन ताड़िता समान सदा मुकुट मयूर के विकास धरियत हैं। मंद बोल बांसुरी गराज बारि बाहन त्यों हीरन के हार बकपांति परियत हैं॥ कलुष जवासो जन जारत सुजान शाली सुमति हिये मो नेहबुंद भरियत हैं। होन मन काम अभिराम हिय धाम सदा ऐसो घनश्यामको प्रणाम करियत हैं२ क्रूर अक्रूर भये बृजके बृजराज को ले निज साथ सिधारे। तादिन ते कछु सूझिपरे नाहिं छायो चहूँदिशि है अँधियारे॥ वाछिन की कहो काह सुजान चल्यो जबहीं हरिकंस अखारे। लाखन पाखन राखनकी रह्यो नाखन माखन चाखनहारे ३ शरद मो सलीलन छोरेसरिसंगम को करिके तरंग स्वच्छ आनँद सजत है। मुदित मराल संग हंसिनी बिहार करे मधुपमालिंदनी के संग ना तजतहैं॥ बासरेश बुद्धिबर विदित सुजान सबैसोऊ सुखपाय राशि युवती भजतहैं। खंजन की जोरीखिन होय ना अजोरी अजों कहियो पाथिक कान्ह काहेना लजत है ४ व्योम बाण गृह चंदयुत श्वासासुखद सुखन्म। कृष्णचंद्रके जन्म दिन कृष्णचन्द्रिका जन्म ५॥

सेवक

जागि रहीं सखियां सिगरी कह सेवक झांके किवार उघारी। भोर करेगी सबै उपहास हँसैंगी बजाय बजाय के तारी॥ भाजि न जैहो करो परतीत सबै रखिहौं रुचि नाथ तिहारी। कीजे क्षमा घरी द्वैक पिया बजनी घुंघुरू रजनी उजियारी १ श्रौनन को भयो मोहन मंत्र

शिवानन्द भवपार ॥ भृगुआश्रम के पूर्वदिशि पंचकोश परमान। हरदिग्राम हरिनाम जपि शिवासुकीन्हपयान४॥

हरगोविन्द

रेमनमूढ़ वृथा भटके किन पावत दुःखधराबहुताई। नेकु न ताहि बिचारकरे लपटे यहि मो निजजन्मगँवाई॥ वेदपुरानन की बचमानि भजे किनशङ्कर नाम सुहाई। जोजनको तरुकल्प समान गरीबनकोप्रतिपालकसाई १

हाफिज

नरनीको शीलवान घरनीको धनवान करनींकोयुतदान कहत जहानहै। रूपवान नारि नीको द्वारे चारि गारिनी-को शीतलबयारिनीको तेजवान भानहै॥ बिषबूझे तीर भोड़ो बैद्य बिनतीर भोड़ो ताल बिन नीर और मौनी विद्यावान है। रागी तान बिन भोड़ो तलवार सान बिन हाफिज अधिकभोड़ो मित्रको पयान है १॥

इतिश्रीसुजानकविसंग्रहीतसुजानसरोजग्रंथसमाप्तः॥

[कवियों का संक्षिप्तजीवनचरित्र]

अजान सं० १९४१

पण्डित नकछेदी तिवारी डुमराँववासी ये महाशय मनोजमंजरी बीरोल्लास आदि छोटे २ ग्रंथ संग्रह किये हैं रचितग्रंथ कोई नहीं है स्फुट काव्य करते हैं जीविका मालूम नहीं सफ़ा ४ ॥

अम्बादत्त सं० १९१८

इनके नाम से कौन परिचित नहींहोगा भारत रत्न की उपाधि कविसमाज की ओर से मिली पहले वैष्णव पत्रिका सं० १९३९ में निकालेथे अब अपने ग्रामही में † पीयूषप्रवाह नामी पत्रनिकालरहे हैं ग्राम इनका भागलपूर है आजकल मूर्तिपूजापर व्याख्यान अनेकदेशों में देते फिरतेहैं ललितानाटिका समस्यापूर्तिसार तासकौतुक पचासा मूर्तिपूजा ग्रंथ इनके बनाये मेरेपास मौजूद हैं सफ़ा ४ ॥

ईश्वरदत्त सं० १९४८ [मृत्युसम्बत्]

परम पूज्य हमारे पिता जू का नाम है पचीस बर्ष तक इन्होंने नौकरीकी तत्पश्चात् मकानपर आय गंगा सेवन करतेरहे मृत्यु इनकी मुनियों की तरहहुई अर्थात् पहले लोगों से कहदिये थे कि हम चैत्रशुक्ल त्रयोदशी

† यह पत्र २१ फरवरी सन् १८८५ से निकलने लगा ॥

को मरेंगे वही सो भया स्फुटकाव्य तथा भजन बहुत बनाये हैं किन्तु ग्रंथ कोई नहीं सफ़ा ५॥

कालिका सं० १९२१ *

श्रीमान् महाराज कुमार बाबू कालिकाप्रसाद सिंह राज्य रियासत हल्दी के हैं कविता अच्छी करते हैं स्फुट काव्य इन्होंने भी बहुत की है सफ़ा ५॥

कृष्ण

ये महाशय ब्रह्मभट्ट मिश्र असनी ग्राम ज़िले फतेहपूर के हैं और महाराज डुमराँव के यहां कवियों में नौकर हैं महाराज साहिब तथा उनके सुयोग्य दिवानराय जयप्रकाशलाल की बहुत कविता की है ग्रंथ कोई नहीं देखा है सफ़ा ६ जन्म इसी शताब्दी का होगा॥

कार्तिक

श्रीयुत बाबू कार्तिकप्रसादजी काशी बासी--कविता अच्छी करते हैं नागरीप्रचारणी सभाके सिक्रेटरी आदि पदों से बिभूषित हैं ऊषामंगल नाटक रूप अच्छे ग्रंथ रचे हैं सफा ६॥

कान्हसं० १९२४

श्री पण्डित माधवलाल शर्म्माके द्वितीय पुत्र बाबू कान्हू लाल गुरदागया निवासीके हैं ग्रंथ इन्होंने संगीत मकरन्द श्रावन मयूर सुधातरंगिनी आनन्दलहरी जग

---

* जिसपर यह चिन्ह हो वह जन्म सम्बत् ठीक जानना॥

न्नाथ माहात्म्य और नखशिख रचेहैं जीविका कलकत्तेमें शायद नौकरी की है सफ़ा ७ ॥

कमलाकन्त सं० १९००

नाम इनका बाबू रामाकन्त गोरखपूर के बकीलथे वैष्णवी पन्थ रहते थे होलीविहार एकही ग्रन्थ रचकर छोड़दिये स० ७ ॥

खड्गमल्ल सं० १९१० *

श्रीमान् महाराजा उदयनारायण सिंह राजामझौलीके पुत्र इन महाशयके चरित्रोंसे सब कोई भेदूहै इनके यहां सदासे कवियों का सन्मान होता आया उनसे अधिक ये साहब कदरदान थे हमेशा काव्य कीर्तनही में अपना समय बिताये अपने नामसे † खड्गबिलास प्रेसबाकीपूर में स्थापित किया ग्रंथ इन्होंने बिशेनबंशवाटिका ॥ अपने राज्य के तवारीखरूप अच्छा रचे हैं पर खेद का विषय कि थोड़ेही समयमें ये स्वर्गको सैर करने चले गये इनकी प्रशंसा में हरटिंगटन साहिबने यह लिखी थी Raja Udya Nardyen Mall of MaJhouli and his son Kharg Nall have to day been Zecived by the iVceroy at a Private interview "सफ़ा ८ ॥

गजेन्द्रशाहि

श्रीमान्हयहो वंशावतंस बाबूगजराजसिंह जी बहादुर हल्दी आपकी जहांतक प्रशंसा कीजाय अत्युक्ति नहीं होगी आपने तुलसीदास की भांति सप्तकाण्ड रा-

† इसी प्रेसवे इनके प्रबंध से सन् १८८१ ई० से क्षत्रिय पत्र का निकला ॥

मायण रचेहैं और रामचन्द्र के अनन्वय भक्त थे इन्हीं के पौत्र रघुबीर कवि जी विद्यमान अधिष्ठाताहैं सफ़ा ८

गुलाब

ये महाशय रियासत बून्दी के बाबू हैं रावकरके भूषित हैं वहां के कौंसल के मेम्बर हैं हाथी घोड़ा ग्राम बहुतसाहै आपने छोटी२ करीब २५ तक पुस्तक रचीहैं इनका वृत्तांत मुझे बाईचंद्रकला जी से मिला स ९ ॥

गोविन्द.

गोपालपूर के महाराज किशुनकिशोरचन्द्र के यहां कवियों में थे उन्हीं के नाम से कोक का ग्रन्थ विलास तरंग रचाहै सुनाजाता है कि सन् १८५७ के बलवे में बागियों के द्वारा मारेगये स० १० ॥

गोपीनाथ

ये महाशय जैपुर राज्य के वकील अर्बुदाचली हैं स्फुट काव्य बहुत करते हैं हमारे समस्यापर इन्हों ने आठ पूर्ति भेजी थी सफ़ा १० ॥

गौरीशंकर

ये महाशय कानपूरके ब्रह्मभट्ट हैं प्यारे प्रतापमिश्र के प्रेमी हैं उन्हीं के नाम प्रताप पुस्तकालय खोला था किन्तु मालूम नहीं कि उसे त्यक्तकर * चरखारीभूषण को सम्पादन करने राज्य चरखारी क्यों चलेगये† भट्ट भास्करके पहिले सम्पादक थे सफ़ा ११ ॥

---

*यहपत्र१जुलाई सन्१८९५से रामगोपाल तिवारीके प्रबन्धसे राज्यचरखारी से निकलताहै।

† यह पत्र कानपुर से १८८३ से निकलने लगा ॥

गोपालानन्द सं० १९०२

पहले ये महाशय सदराला थे किन्तु ऐसी बिराग उठी कि नौकरी से इस्तीफ़ा दे संन्यास धारण करली तत्पश्चात् गोरक्षिणी सभाके सहायक बने वम्हपूराके मेले में इन्होंने कसाइयोंको मार बहुतसे गायें छीनली थीं जिससे डेढ़बर्ष सपरिश्रम कारागार भेजे गये किन्तु छूटनेपर फिरभी अपनी उत्साह नहींछोड़ा सफ़ा ११ ॥

चन्द्रकला

इनके सदृश इस समय में स्त्रियों में कोई काव्य विषयक ज्ञान नहीं रखतीं इन्हों ने महाराज बून्दी के यहां लड़कियों के पढ़ाने में नौकर हैं रामचरित्र सप्त काण्ड अच्छा ग्रन्थ रचो है पदवी प्रकाश महाराज के नाम से बनाई है करूणाशतक भी इनका बनाया देख ने योग्य है सफ़ा ११ ॥

छबीलें

आप फ़तेहपुरके किसीग्रामके निवासी हैं गोस्वामी करके लिखे जाते हैं इन्हों ने स्फुट काब्यकी है किंतु जब से पण्डित कुन्दनलालजी स्वर्गयात्राकी तब से ये महा शय भी न मालूम कहां अन्तरिक्षसे होरहेहैं सफ़ा १२॥

जगतनारायण बनारसी

उक्त पंडितजीको काव्य विषयकतो उतना ज्ञान नहीं किन्तु अपने मतके सच्चे हितैषी हैं इन्होंने ईसाइयों की खंडन की पुस्तक और यमनोंकी दुर्दशा दीनकी अपने

रचित ग्रन्थों से खूब दरशायाहै गोरक्षा की पुस्तक बहुत बनाये हैं कुछ दिनके लिये गोसेवक पत्र भी निकाले थे किन्तु वह बन्द होगया सफ़ा १२॥

जगन्नाथ शुक्ल

आप खानजहाचक जिला मुजफ्फरपूर के पण्डित हैं कविता कुछ कुछ करते हैं अंग्रेजी पढ़े हैं देशाटन में अधिक परिश्रम करतेहैं छन्द प्रभाकर हमने इनके यहां भेजा था किन्तु पंडित जी ने लिखा कि हम नहीं पाया पाकट अनरजिस्टर्डथा सफ़ा १२॥

तिलकसं०१९३०*

पूरन पुर जिला कानपूर के निवासी शिवराम सिंह के आत्मज हैं सत्रह बर्षकी अवस्था में इन्होंने नागरी में मिडिलोत्तीर्ण हुये तबसे गृहकार्य्य में रह कुछ २ कबिता करते हैं ग्रंथ कोई नहीं रचा है फाल्गुनमें इनका जन्म हुआ सफ़ा १३

दूथनाथसं०१९२०

ये महाशय हरिछपरा के रहने वाले हैं किन्तु भलसण्ड में मुदर्रिसी करते हैं इन्हों ने काव्यविषयक कोई पिंगल आदि नहीं पढ़ी किन्तु जबसे गोरक्षिणी सभा की पृथा हुई इन्हों ने दो एक ग्रंथ उस बिषय के बनाई यद्यपि कविता काव्य अंगों से हीन होतीथी किन्तु धर्म वाक्य होने से प्रचार बहुत हुई खेद का विषय है कि अब पण्डित जी गोरक्षाते पराङ्मुखस होरहेहैं बलिया

* यह पत्र सन् १८९३ ई० के जुलाई को अगस्त से निकला पर जल्दीही बन्द होगया

और दुआबाकी बोली में बहुत कबिता की है सफ़ा १३

धर्मराज

पण्डित जी मिश्र शिवपूर दियर जिले बलिया के बाशिन्दा हैं कबिता कर नाम प्रकाश करने की बहुत चाह रखते हैं किन्तु कबिता नहीं आने के कारण दूसरे की बनाई हुई अपने नामसे छपालेते हैं रसकमोहनी गृंथ लक्षम की बनाई आधी तेल आधी पानी कर छपाये हैं बहुत से मार्कंडे की कजलियों में अपना नाम रख दिये हैं सफ़ा १४

नवीन

इनका नाम राय गदाधर प्रसाद ब्रह्मभट्ट है कबिता इनका बहुत समाचार पत्रों में छपा करती है ये बिलग्रामी ब्रह्मभट्टहैं विशेष हाल मुझे मालूम नहींहै सफ़ा १४

प्रतापसं० १९१७

मिश्र प्रताप नारायण कानपूरी के नाम से को बिदितनहीं होंगे मिश्रजी पण्डित संकटा प्रसादजी के पुत्र और मिश्र रामदयाल जी के पौत्र थे ये महाशय अंग्रेजी फारसी बंगला नागरी सब विद्या के पूर्ण ज्ञाता थे भारतेन्दु हरिश्चन्द्र जी के साथियों में थे ब्राह्मण *पत्र सम्पादन करते थे शैवसर्बस्व ज्वारी ख्वारी मनकी लहर प्रेम पुष्पांजलि कलिकौतुक रूपक आदि ग्रंथ बनाये हैं एकबार पण्डित जी ने स्वामी भास्करानन्द जी के साथ

* यह पत्र १ मार्च सन् १८८३ ई० को कानपुर से निकला।

कनौज में गोरक्षा पर व्याख्यान दिया था उस में एक लावनी "बांबांकरि तृणदाबि दन्तसे दुखित पुकारत गाई है" गाई थी जिस्में हसनू नामी प्रसिद्ध कसाईने अपना पेशा त्यक्त करदिया खेद है कि पण्डित जी अभी परसालही स्वर्ग बास को चले गये सफ़ा १५

प्यारे सं० १९२८ *

नामतो हिन्दू सा है पर जात मुसलमान है नाम इनका मुहम्मद अब्दुस्सत्तार है कांव्य के रसिक हैं इस वक्त मुदर्रिस हैं पिता इनके नामी हकीम हमारे फ़ारसी विद्या के उस्ताद हैं सफ़ा १५

पूरणमल *

झांसी बासी पूरणमल मुदर्रिस भजना नन्दीहैं सफ़ा १६

पन्ना लाल

हमे शुबह है कि यंह पन्ना लाल जैन है या घाटम पुरी अग्निहोत्री है इन्हीं दो में कोई होंगे कविता इन की कवि वचित्रकारके प्रति पत्रमें छपीमिली सफ़ा १७

बीरकवि सं० १९१५ *

ये महाशय भारत जीवनपत्र के सम्पादक हैं नाम तो सबपर विदितही है कि राम कृष्ण बर्म्मा हैं सन् १८७५ ई० में इन्होंने अंग्रेज़ी इन्ट्रेस पासकिया और ७९ में एफ़,ए. पासकिया सन् १८८४ में भारतजीवन प्रेस स्थापितकी बाबू हरिश्चन्द्र जी के मित्रों में हैं कवि समाज काशी के मेम्बर हैं महाराज काशीराज श्रीमदी-

इवरी प्रसाद नारायण सिंह G C S I और महाराज प्रभु नारायण सिंह k C I E के दर्बार में सतकारिता प्राप्त है पुस्तकें बहुत रचे हैं बलबीर करके भी पदपूर्त्ति करते हैं सफ़ा १६ ॥

बुधनहल्दी बासी सं० १९३१

ये बाबू चौहान बंशी राजपूत हैं नागरी में मिडिलोत्तीर्ण हैं कुछ २ कविता करते हैं हमारी बनाई प्राविटप्रियाको संगूहकर छपाये हैं पिता इनके रामश्याद राव नामी थे सफ़ा १७॥

बिंधेश्वरी सं० १९१४

गोरखपुर ज़िले के ग्राम सहगौरा के निवासी तिवारी हैं इस समय डांक के हेडक्लर्क हैं मिथिलेश कुमारी नामी नाटक रचे हैं बहुधा इनकी शब्दार्थ गुटका मदरसों मे जारी है सफ़ा १८ ॥

बामन

गोस्वामी बामनाचार्य्य मिर्जापुरी करके प्रख्यात हैं किन्तु नहीं मालूम किसकन्दरे के बासी हैं कि इनके पास तक पत्र जाना असम्भव होती है हमने इनके जीवन वृत्तांत के लिये दोपत्र लिखा किन्तु वे दोनों अनक्लेम्ड (Unclaimed) करके मेरे पास लौट आई पंचानन पचीसी इनका रचा हरिश्चन्द्रकौमुदी जमोर द्वारा प्राप्त हुआ सफ़ा १८ ॥

वचन

इस नाम के दो कवि हैं एक फतेहगढ़ के बचनेश दूसरा कानपूर के बचन पर विदित नहीं इन दोनों में कौन हैं कोई हो कवि दोनों अच्छे हैं सफ़ा १६ ॥

भानु सं० १९१६

इनका नाम जगन्नाथ प्रसाद है एसिस्टन्ट सेटिल-म्यन्ट आफिसर वैतूलके हैं जन्म इनका श्रावण शुक्ल १० को नागपूर में हुआ मुख्यस्थान बिलासपुरहै अंग्रेजी उर्दू उड़ियाके ज्ञाता हैं पिता इनके श्री बख्शीराम जी हनुनाटक बनाये हैं ये महाशय केवल छन्दप्रभाकर नामी पिंगल एकही रचे हैं धर्म ब्रह्मोसमाजी हैं जात बताने में आपने यह चौपाई लिखी "जातपांति पूंछे नहिं कोई। हरिके भजे सो हरिके होई॥ सफ़ा १६ ॥

मार्कण्डे

ये कवि कोपागंज निवासी हैं सूर्य्यपूरा के दिवान साहब तथा उनके पुत्र राजेश्वरीप्रसाद जी के आज्ञा-नुसार श्रावणश्रृंगार नामकग्रन्थ बनाये हैं और शरद ऋतु इत्यादि पर षटऋतु काव्य बहुत किये हैं जन्म सम्बत् विदित नहीं है सफा १६ ॥

मनराजसं० १९०९

श्रीमान् बाबू कुंवरसिंह बहादुर जगदीश पुरीके यहां मुसाहेब में नौकर थे सन् १८५७ ई० के बलवे में जब बाबू साहब अंग्रेजों से बिरुद्ध खड़े होगये उन्हींके साथ२

ये भी लड़ते फिरे बल्कि उनके घोड़े के तारीफ़ में एक कबित्त यह कहा था "समुद सुरंग लीला मकसी कुरंग ऐसो कुल्ला औ कुमैत मनिजोति लरकतहै। अबलख टोपरा लखाउरी सबुज गरी कक्षी के तमासे देखि पक्षी सरकत है॥ कहे मनराज बाजी कुवँर बहादुर के बढ़त कतार भानुरथ हरकत है। बदले कनोटी करे नेकऊन खोटी देखो चोटी के छुयेते बोटी २ फरकत है १॥

रघुबीर सं० १९१९ *

स्वस्तिश्री मान् महाराज कुमार बाबू रघुनन्दन प्रसाद सिंहजी हल्दीवाले इनकी विज्ञता विद्वानता विभव और व्यवसाय सराहनीय हैं आप काव्यके पूर्ण रसिक हैं सैकड़ों पुस्तक काव्य की इकट्ठी की हैं सभातरंग इनकी बनाई गून्थ देखने योग्यहै इनके पिता श्रीरामनारायण सिंह जू अच्छे विद्यावान थे सफ़ा १९॥

रमाकन्त सं० १९२० *

बलिया अन्तर्गत पण्डित पुरा गाम निवासी उक्त पण्डित जी कवियोंमें महान माननीयहैं कविताही नहीं बरन ज्योतिष शास्त्रके भी ऐसे भेदू हैं कि जिसे अनेक राजाओं के यहां सत्कारिता प्राप्तकी है किसी नागरी के मिडिल वाले लड़के ने कहा कि मिडिल का कोर्स बड़ा कड़ा है इन्हों ने कहा ज्योतिष शास्त्र बड़ा कठोर है मिडिल तो हम दो सप्ताहमें पढ़ इम्तहान दे पास होसक्ते हैं विद्यार्थी के बादाबिवाद करने से इन्होंने ऐसाही कर दिखाया सफ़ा २०॥

रामपाल सिंह

श्रीमान् राजा कालाकांकर ये महाशय से कौन अपरिचित हैं आप भारत के भलाई के लिये भरपूर उद्योगी हैं वरन आपने पत्र हिन्दोस्थान * इसी आकांक्षा पर निकाला जिसका टेकू अभीतक निबाहा जाता है पहले अंग्रेज़ी में पत्र हिन्दोस्थान इंगलैण्डमें जारी किये थे तत्पश्चात् अपने राजधानी में हिन्दी और इंगिलिश दोनों भाषा में दो पत्र निकाल रहेहैं सफ़ा २१

राव रामनाथ बुन्दीवाले

इनकी संक्षिप्त वृत्तान्त चन्द्रकलाबाई जी से प्राप्त भयो ये महाशय अच्छे कविता हैं बरन इस बिषय पर समाजों से अनेक प्रशंसा पत्र तथा मिडिल पास की है इनके बनाये ये ग्रंथ हैं परमेश्वराष्टक सती चरित्र समस्या सार रामनीति नीतिसार सफा २१ ॥

ललित

मल्लावां भगवन्तनगर के त्रिबेदी ललिता प्रसाद जी अच्छे कवि हैं इनकी काव्य सराहनीय होती है इन के भांजे पण्डित कामता प्रसाद जी भी अच्छे कवि हैं काव्य स्फुट करते हैं सफ़ा २१ ॥

लक्ष्मण १९२१

तिवारी लक्ष्मण जी भलसंडके रहनेवाले हैं जीविका इनकी नौकरी मुदर्रिसी है आप काव्यके ऐसे उत्सा

---

* यह पत्र अगस्त मास सन् १८८३से १८८५ के जुलाईतक इंगलैंड में प्रकाशितहोतारहा ॥

ही पुरुषहैं कि अंट संट भी बनागूंथ छपादेते हैं आप की प्रथम काव्यकी पुस्तिका कवित्त बत्तीसी ४ पन्ने की है जिसका नमूना यह है सवैया "सरल सुभाव अंग लखानि तिवाणी बोलेबर प्रीति की सानी। चाल चले सुमराल इवविधि बुद्धि विवेक में इन्द्र समानी॥ दान करे हरिश्चन्द इमिसनमान करें उनके अनुमानी। सर राधा प्रसाद जू में कहे लक्ष्मण रूप मिलिये निशानी॥" दूसरी पुस्तिकारसिकमोहनी भी विलोकनीयहैसफ़ा२२

लाल हल्दीवासीसं०१९३४

श्री महाराजे ठाकुरप्रसाद देवजी के प्रथम पुत्र श्री राजेन्द्र प्रतापनारायण जी पावस प्रलाप नामी गूंथ बनवाये हैं सफ़ा २२॥

लालजी

फतेहपुरान्तर्गत असनी ग्राम बासी ब्रह्मभट्ट हैं इन लोगों की तो काब्य जीविकाही है फ़िर कबि क्योंन होवें ये कबि महाराज श्रीब्यंकटेश्वर प्रसाद महाराज रीवाँ के यहां कबियों में नौकर हैं सफ़ा २३॥

सम्पातिसं०१९२९

मुजफ्फर पुरमें जज्जीके किसी क्लर्क के मुहर्रिरहैं नीति भूषण नामी गूंथ काब्यका और मन्त्रविषोद्धारचन्द्रिका बिषनिवारण का इनका बनाया हमने देखा है सफ़ा २३॥

सीतारामसं०१९२४

ये महाशय पिलकिछा ग्राम निवासी भारद्वाजी उ-

पाध्याय हैं जीविका इनका काइतकारी और ब्योहार का है काव्य के अत्यन्त चातुर हैं अनेक समाचार पत्रों ने इनकी प्रशंसाकी हैं चैतन्यचन्द्रोदय बामामनरंजन नाम प्रताप शृंगारांकुर काव्यकलामिनी और मण्डली मण्डन इन्होंने गृंथ रचा है इनके पिता उपाध्याय शिव जगत जी भी अच्छे थे सफ़ा २३

सुजानसं०१९३० [संग्रहकर्ता]

आप सब शायद सुजान नाम देख मुझे चतुर का अर्थ लगाते होंगे सो मत समझियेगा मैं एकतुच्छव्यक्ति हूँ नाम मेरा पण्डित बख्शराम पांड़े है ग्राम हल्दी जान-तेहीहैं मैं नागरी फ़ारसी अंग्रेजी और बंगला कुछ २ सबका बोध रखताहूं और आप सरीखे कबियों के सत्संगही से काव्य की गम्य हुई है संगीतशिखा बिरह बिहार शिवारामसरोज चुनाचमंन और गंगेतरंगावली संगृह पुस्तक हैं औ श्रीकृष्णचन्द्रचन्द्रिका समस्या पूर्तिसार और प्राविटप्रिया रचित गृंथ है यद्यपि गृह के झंझट से समय अवकाश की नहीं मिलती तौ भी किसी न किसी भाँति अपनी प्यारी भाषा से मिल-ही लेताहूँ सफ़ा २४

सेवक

इनका नाम मुन्शी कालीचरणजी है कानपूरके प्रसिद्ध वकील मुन्शी गुरुसहाय साहब के मुहर्रिर हैं आप भाषाके पूर्णप्रेमी हैंरसिकबाटिका में इन्होंने एकलम्बा चौड़ा भा[illegible] उन्नतिपर ब्याख्यान दिये हैं सफ़ा २५॥

श्यामबिहारी॥

गाज़ीपूरके निवासी उक्तमिश्रजी पं० प्रतापनारायण के पूर्णप्रेमी हैं उनके स्वर्गयात्रा का नाम सुनये महाशय बहुत विह्वलहुये थे "प्यारे न भूलियो प्रीतिपुरानी,, उसी शोकावस्था में बनाये थे इन्होंने भी कवियों की नामावलीएकत्र करने के लिये इश्तहार दीथी और बहुत से एकत्रकिये भी हैं सफ़ा २६॥

श्यामोपनामरणजीतमल्लसं०१८३३

महाराज मझौली उदय नारायणसिंहके भातृथे तेरह बर्ष की अवस्था में काव्य इन्हों ने अच्छीतरहकरते थे इसी अवस्थामें स्वर्गलोक भी इनका होगया सफ़ा२६॥

शिव

पटनाजजीके हेडकिरानी शिवनन्दनसहायजी-इनका ग्राम इसी अन्तके बखतियारपुरमेंहै अक्सरसमस्याओं की पूर्ति करतेहैं ग्रंथकोई नहींरचा एकबारआपने हमारे समस्या छपीहुई की पूर्तिकरभेजा तबसेमेरे भेजनेपरभी अपना जीवन वृत्तान्त कुछनहींलिखा सफ़ा २६॥

शिवप्रसाद

ये महाशय दरभंगा के पण्डित हैं कविता अच्छी करते हैं बरन इसी समस्या अर्थात् "भाल लिखीलिपि को सक टार,,परपं०कुन्दनलालजी घड़ी उपहारमें देना कहा था सफ़ा २७॥

शिवानन्द

कवि के अतिरिक्त ये महाशय महात्मा भी थे हल्दी ग्राम बासी ब्राह्मण थे एक मर्तबा मालगुज़ारी में जमीं-दार ने इनका नाजका गल्ला ज़ब्त कररक्खा था इन्हों ने ऐसी प्रयोगकी कि सैकड़ों मनुष्यकी मृत खोपड़ी अ-पने छिद्रमें नाज भर २ इनके घर पहुंचागईं शिवाराम सरोज इनका बनाया शान्तरस का ग्रंथ देखने योग्यहै सफ़ा २७॥

हरगोविन्द सं० १९३१

ग्राम इनका भरसौता है बरहिया राजपूत बोधीराय के लड़के हैं काव्य का शौक रखते हैं कभी२ एक आ-ध कवित्त उगिल भी देते हैं पिता इनके "जयनारसिंह" के ओभा हैं सफ़ा २८॥

हाफ़िज सं०१९१३

हरदोई अन्तर्गत बन्नापूरके मुदर्रिस हैं ग्रामसांड़ी मुहल्ला ऊंचा टीला हैं मुसलमान होने पर भी गजल सैर से मुखमोड़ विशेष कर भाषा काव्यको आदर कर-ने वाले हैं ग्रंथ इन्होंने नवीनसंग्रह हजारा मनमोहनी प्रेमतरंगिणी रसिकजीवनी संग्रहकी हैं किन्तु इतने पु-स्तकों में एकही आध निज रचित कविता है सफ़ा२८

समाप्त

इतिश्री सुजानकविसंग्रहीतसुजानसरोजग्रन्थ कवियों कीसंक्षेपजीवनचरित्र समाप्तः॥

इति

[कविसंख्या उन्नीसवींशताब्दी]

निम्नलिखित कवियों से विनय है कि आप सबके हालातों से भेदू नहीं थे अतः केवल नाममात्र लिखदेते हैं यदि आप सब अपना पूरा वृत्तान्त भेजेंगे तो दूसरे खण्ड में प्रकाशित करदीजायगी जो अति शीघ्रतय्यार होनेवाली है विशेष क्षमा करना ॥

१ रसीले. = कासीबासी	१८ छठीलाल = भागलपूर
२ लछिराम = अयोध्या	१९ कान्तजी = जौनपूर
३ रतनेश = कालपी	२० बिश्वनाथ = दरभंगा
४ बंशी = कानपूर	२१ बिक्रमसिंह = बनकोटा
५ रत्नाकर = काशी	२२ महेन्द्र = उदयपूर
६ पं०शीतलाप्रसाद=काशी	२३ मुकुन्दजी = हाथरस
७ प्रयाग = निवन्ना उन्नाव	२४ महाबीर = झांसी
८ गंगाप्रसाद = जगतपूर	२५ गंगासिंह = मैनपूर
९ रामगोपाल = पिलकिछा	२६ शेषकरीम=हल्दीवालिया
१० सूर्य्यलाल = मथुरा	२७ द्वारका = बिलग्राम
११ बल्लभजी = डुमराँव	२८ श्यामसुन्दर = काशी
१२ मुरली = भरतपूर	२९ बिश्वनाथ=कालाकाँकर
१३ गंगाराम = फुलपूर	३० रामलाल = काशी
१४ श्यामलाल=दाऊदनगर	३१ अशरफी = रामनगर
१५ मिश्रसेवक = रीवाँ	३२ अक्षयवट = डुमराँव
१६ युगलदास = रीवाँ	३३ रामचरित्र=आजमगढ़
१७ सुखराम = पट्याला	३४ परमानन्द = [illegible]पूर

३५ हरिऔध=निजामाबाद	३८ गोविन्द = सिहोरभाव [नगर
३६ रामकिशोर = डुमराँव	
३७ बलदेव = रामनगर	

पं० सुजानकविहल्दी
बलिया

इति
